विश्वासियों के लगाए जाने के चार स्थान

शालोम!

बाइबल में विश्वासियों की तुलना बार-बार उन पौधों या वृक्षों से की गई है जिन्हें परमेश्वर ने स्वयं लगाया है। उदाहरण के लिए, भजन संहिता 1:1-3 में लिखा है —

1 धन्य है वह मनुष्य
जो दुष्टों की सम्मति पर नहीं चलता,
न पापियों के मार्ग में खड़ा होता,
और न ठट्ठा करने वालों की मण्डली में बैठता है;
2 परन्तु जिसका मन यहोवा की व्यवस्था से लगा रहता है, और जो उसकी व्यवस्था पर दिन-रात ध्यान करता है।
3 वह उस वृक्ष के समान है
जो जल की धाराओं के पास लगाया गया है,
जो अपने समय पर फल देता है,
और जिसके पत्ते मुरझाते नहीं;
जो कुछ वह करता है, वह सफल होता है।

यह पद बताता है कि हर धर्मी व्यक्ति — अर्थात हर वह जिसने उद्धार पाया है — आत्मिक रूप से कहीं न कहीं लगाया गया है।

यह समझना बहुत आवश्यक है कि परमेश्वर हमें किन-किन स्थानों पर लगाता

है। जब हम यह समझ लेते हैं, तो हमारे भीतर शांति और दृढ़ता आती है। बहुत-से मसीही कठिनाइयों के समय थक जाते हैं, विश्वास खो देते हैं या पीछे हट जाते हैं। पर जब हमें पता चलता है कि हम कहाँ और क्यों लगाए गए हैं, तो हमारे भीतर नई सामर्थ और उत्साह उत्पन्न होता है।

अब आइए देखें — वे चार मुख्य स्थान कौन-से हैं जहाँ विश्वासियों को लगाया जाता है।

1. हम खरपतवार (जंगली घास) के बीच लगाए गए हैं

मत्ती 13:24-30 में यीशु ने कहा —

“स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। परन्तु जब लोग सो रहे थे, उसका शत्रु आया और गेहूँ के
बीच जंगली घास बो गया और चला गया। जब फसल उगकर फल लाई, तब जंगली घास भी दिखाई दी।
तब दासों ने आकर कहा, ‘स्वामी, क्या तूने अपने खेत में अच्छा बीज नहीं बोया था? फिर यह जंगली घास कहाँ से आई?’
उसने कहा, ‘यह किसी शत्रु ने किया है।’
दासों ने पूछा, ‘क्या हम जाकर उसे उखाड़ दें?’
उसने कहा, ‘नहीं, कहीं ऐसा न हो कि तुम जंगली घास उखाड़ते समय गेहूँ भी उखाड़ दो। दोनों को कटनी तक साथ बढ़ने दो।’”

बाद में यीशु ने समझाया कि अच्छा बीज राज्य के लोगों का प्रतीक है, खेत संसार है, और जंगली घास दुष्ट के लोग हैं। परमेश्वर दोनों को अंतिम न्याय तक साथ बढ़ने देता है।

इसका अर्थ है कि हमें अधर्मी लोगों के बीच रहना है। हम अलग दुनिया में नहीं रह सकते जहाँ केवल मसीही हों। हमें संसार में, कार्य-स्थलों में, पड़ोस में, विद्यालयों में, यहाँ तक कि कभी-कभी कलीसिया में भी, ऐसे लोगों से सामना करना पड़ेगा जो गलत करते हैं।

परन्तु प्रभु हमसे क्या चाहता है?
वह नहीं चाहता कि हम संसार से भाग जाएँ। जैसा यीशु ने प्रार्थना की —

“मैं यह नहीं चाहता कि तू उन्हें संसार से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचा।”
(यूहन्ना 17:15)

परमेश्वर की इच्छा यह है कि हम दुष्टों के बीच रहकर भी धर्मी फल लाएँ — जैसे दानिय्येल ने बाबेल में, यूसुफ ने मिस्र में, और यीशु ने इस संसार में।

इसलिए, चाहे आप किसी अविश्वासी जीवन-साथी के साथ रहते हों, कठिन पड़ोस

में हों, या भ्रष्ट वातावरण में कार्य करते हों — अपनी ज्योति चमकाएँ! उस दिन की प्रतीक्षा न करें जब सब आपके समान विश्वास करेंगे। परमेश्वर चाहता है कि आप अभी प्रकाश बनें।

2. हम अन्य अच्छे वृक्षों के बीच लगाए गए हैं

यीशु ने एक और दृष्टान्त कहा (लूका 13:6-9) —

“किसी व्यक्ति के अंगूर के बाग में एक अंजीर का वृक्ष लगाया गया
था। जब वह उसके पास फल ढूँढ़ने आया, तो कुछ न पाया। तब उसने बाग़ के रखवाले से कहा, ‘देख, मैं तीन वर्ष से इस अंजीर के वृक्ष पर फल ढूँढ़ने आता हूँ और नहीं पाता; इसे काट डाल! यह भूमि को व्यर्थ क्यों घेरे?’
उसने उत्तर दिया, ‘हे स्वामी, इसे इस वर्ष और रहने दे। मैं इसके चारों ओर खोदकर खाद डालूँगा। शायद यह फल दे; नहीं तो फिर इसे काट देना।’”

ध्यान दीजिए — बाग़ अंगूर के पौधों से भरा था, पर उसने वहाँ अंजीर का वृक्ष लगाया। फिर भी, वह फल नहीं लाया।

यह हमारे लिए भी संदेश है। कभी-कभी परमेश्वर हमें ऐसे वातावरण में

रखता है जहाँ और भी अच्छे विश्वासियों का संग है, फिर भी वह चाहता है कि हम भी फल लाएँ।

बहुत-से मसीही जब किसी नई जगह, शहर या देश में जाते हैं, तो कहने लगते हैं, “यहाँ मेरे जैसे मसीही नहीं हैं,” या “मैं अकेला हूँ।”
परन्तु भाई-बहन, ऐसा मत सोचो! परमेश्वर हर जगह फल की अपेक्षा करता है। चाहे आप अकेले ही क्यों न हों — वहाँ भी सुसमाचार साझा करें, विश्वास में दृढ़ रहें, और वही करें जो परमेश्वर ने आपको सौंपा है।

3. हम किसी और वृक्ष पर जोड़े (कलम किए) गए हैं

कभी-कभी परमेश्वर हमें न केवल किसी खेत में लगाता है, बल्कि किसी और वृक्ष पर जोड़ देता है।

रोमियों 11:17-18 में लिखा है —

“यदि कुछ डालियाँ तोड़ी गईं, और तू, जो जंगली जैतून का वृक्ष था, उनके बीच जोड़ा गया और अब तू उस मूल और रस में सहभागी हो गया है जो जैतून के वृक्ष का है, तो तू उन डालियों पर घमण्ड न कर। स्मरण रख,
तू मूल को नहीं सम्भालता, बल्कि मूल तुझे सम्भालता है।”

हम मूल डालियाँ नहीं हैं; हम अनुग्रह से जोड़े गए हैं। इसलिए हमें नम्र रहकर विश्वास में स्थिर रहना चाहिए।

सुसमाचार प्रचारक राइनहार्ड बोनके ने एक बार बताया कि अपने सेवकाई के प्रारम्भ में जब उन्होंने संकोच किया, तब परमेश्वर ने उनसे कहा — “जिस अनुग्रह को मैंने तुझे दिया था, वह पहले किसी और को दिया गया था जिसने उसे ठुकरा दिया। यदि तू भी इंकार करेगा, तो मैं यह किसी और को दे दूँगा।”

यह हमें याद दिलाता है — हमें जो कुछ मिला है, वह अनुग्रह से मिला है। इसलिए हमें नम्र, आज्ञाकारी और फलदायी बने रहना चाहिए।

4. हम उपजाऊ भूमि में लगाए गए हैं

मरकुस 11:12-14, 20 में लिखा है —

“दूसरे दिन जब वे बैतनिय्याह से निकले, तो यीशु को भूख लगी। उसने
दूर से एक अंजीर का वृक्ष देखा जिस पर पत्ते थे, और वह यह देखने गया
कि शायद उस पर कुछ फल मिले। परन्तु जब वह उसके पास पहुँचा, तो केवल पत्ते ही मिले, क्योंकि अंजीर का समय नहीं था।
तब यीशु ने उससे कहा, ‘अब कभी कोई तुझ से फल न खाए।’ …
और अगले दिन जब वे वहाँ से गुज़रे, तो उन्होंने देखा कि वह अंजीर

का वृक्ष जड़ों से सूख गया है।”

पहली दृष्टि में यह कठोर प्रतीत होता है — जब फल का समय नहीं था, तो यीशु ने क्यों शाप दिया?
परन्तु यीशु ने देखा कि उसकी स्थिति और हरियाली देखकर उसमें फल होना चाहिए था।

यह हमें सिखाता है कि जब हम उद्धार पाते हैं, उसी क्षण हमें पवित्र आत्मा मिल जाता है जो हमें सामर्थ देता है कि हम साक्षी बनें और आत्मिक फल लाएँ। अब हमें वर्षों तक “परिपक्व” होने की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए।

इसलिए स्वयं को “नया विश्वासी” या “अनुभवहीन” न समझें। प्रभु आज ही फल की अपेक्षा करता है। यदि वह लौटे और फल न पाए, तो वह निष्फल को हटा सकता है।

प्रिय विश्वासियों, याद रखें — आप पहले ही उपजाऊ भूमि में लगाए जा चुके हैं। किसी और समय या अवसर की प्रतीक्षा मत करें। आज ही आरम्भ करें! दूसरों से मसीह के बारे में कहें; परिणाम परमेश्वर पर छोड़ दें।

निष्कर्ष

जब हम इन चार स्थानों को समझते हैं जहाँ विश्वासियों को लगाया गया है, तब हम धैर्य, श्रद्धा, परिश्रम और स्थिरता से जीवन जीना सीखते हैं, ताकि हम ठोकर न खाएँ और विश्वास में दृढ़ बने रहें।

मरन-अथा! — हमारा प्रभु आने वाला है!

Share on:
WhatsApp